भी कहते हैं। Ex- भूख, प्यास आदि।
(ii) जो आवश्यकता वातावरण के प्रभाव से उत्पन्न होती है उसे सामाजिक आवश्यकता अथवा मनोवैज्ञानिक आवश्यकता कहा जाता है।
प्राणी को जीवन-यापन के लिए प्राथमिक आवश्यकता के साथ-साथ द्वितीयक आवश्यकता की भी जरूरत है लेकिन प्राथमिक आवश्यकता द्वितीयक आवश्यकता से अधिक महत्वपूर्ण है।

(ख) प्रणोदन (Drive) - जब किसी शारीरिक अवस्था से आवश्यकता उत्पन्न होती है तो उसे एक निश्चित दिशा में संचालित करती है जिसे प्रणोदन कहा जाता है। अतः आवश्यकता एक शारीरिक अवस्था है जबकि प्रणोदन एक मनोवैज्ञानिक संरचना है। आवश्यकता एवं प्रणोदन में गहरा संबंध है लेकिन आवश्यकता की अधिकता होने पर प्रणोदन की भी अधिकता हो ये आवश्यक नहीं है।

(ग) प्रोत्साहन - वह साधन जिससे किसी व्यक्ति का आवश्यकता की पूर्ति हो

पाता है उसे प्रोत्साहन कहते हैं।
प्रोत्साहन के लिए व्यक्ति क्रियाशील रहता है और प्रोत्तसाहन मिलने पर उसकी क्रियाशीलता खत्म हो जाती है।
Ex- एक भूखे व्यक्ति के लिए भोजन प्रोत्तसाहन है, जब वह भोजन कर लेता है तो उसकी आवश्यकता खत्म हो जाता।